प्रातःक्लास 7/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है ?

ओमशान्ति। यह है छोटा सो गुल्शन। ह्युमन गुल्शन। बग़ीचे में तुम जाओ तो उसमें पुराने झाड़ भी होते हैं किसम–2 के। कहाँ मुखड़ियाँ भी होती हैं, कहाँ अधखिली हुई मुखड़ियाँ होती हैं। यह भी बग़ीचा है ना। यहाँ बिल्कुल मुखढ़ें नहीं हैं। कोई–2 मुखढ़ें भी लाते हैं गोद में बिठा कर। अभी यह तो बच्चे जानते हैं यहाँ आए हैं काँटों से फूल बनने लिए। श्रीमत से हम काँटे से फूल बन रहे हैं। काँटा जंगल के होते हैं। फूल बग़ीचे, बस्ती में होते हैं। बग़ीचा है स्वर्ग़। जंगल है नर्क। बाप भी समझाते हैं कि यह है पतित काँटों का जंगल। वह है फूलों का बग़ीचा। फूलों का बग़ीचा था, वही फिर अभी काँटों का जंगल बना है। देह अभिमान है सबसे बड़ा काँटा। इसके बाद फिर सभी विकार आते हैं। वहाँ तो तुम देही–अभिमानी रहते हो। आत्मा में ज्ञान रहता है, अभी हमारी आयु पूरी हुई है। अभी यह पुराना शरीर छोड़ हम दूसरा जाकर लेंगे। सा॰ होता है हम माता के गर्भ महल में जाकर विराजमान होंगे। फिर मुखड़े बनकर फिर मुखाड़े से फूल बनेंगे। यह आत्मा को ज्ञान है। यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है यह ज्ञान नहीं है। सिर्फ़ यह ज्ञान है कि यह शरीर पुराना है। उनको अभी बदलना है। अन्दर में खुशी रहती है। कलियुगी दुनियाँ के कोई भी रसम–रिवाज़ वहाँ होते नहीं। यहाँ होती है लोक–लाज कुल की मर्यादा..... फ़र्क है ना। वहाँ के मर्यादा को सत्य मर्यादा कहा जाता है। यहाँ तो है असत्य मर्यादा। श्रेष्ठा तो है ना। बाप आते ही हैं जबकि श्रेष्ठ हैं। दैवी सम्प्रदाय की जब स्थापना होती है तब ही विनाश होता है। तो ज़रूर आसुरी सम्प्रदाय है। उनमें ही आकर दैवी सम्प्रदाय की स्थापना करते हैं। दैवी गुण वाली सम्प्रदाय स्थापन हो रही है। यह भी समझाया है योगबल से तुम्हारे जन्म–जन्मांतर के पाप नष्ट होनी है। इस जन्म में जो पाप किए हैं वह भी बतानी पड़ती है। इसमें भी खास है विकार की, नंगन होने की बात। याद में है बल। बाप है सर्वशक्तिवान। तो जो सर्व का बाप है उनके साथ योग लगाने से तुम जानते हो पाप भस्म होते हैं। यह (ल॰ना॰) सर्वशक्तिवान है ना। सारी सृष्टि पर इनका राज्य है। वह है ही नई दुनियाँ। हर चीज़ नई। अभी तो ज़मीन ही कलराठी हो गई है। अभी तुम बच्चे नई दुनिया के मालिक बनते हो। तो इतनी खुशी रहनी चाहिए। जैसा स्टूडेन्ट वैसे खुशी भी जास्ती होगी। तुम्हारी यह है ऊँच ते ऊँच यूनिवर्सिटी। ऊँच ते ऊँच पढ़ाने वाला है। बच्चे पढ़ते भी हैं ऊँच ते ऊँच बनने लिए। तुम कितना ऊँच थे। एकदम नीचे फिर एकदम ऊँच बनते हो। बाप खुद कहते हैं तुम स्वर्ग़ के लायक थोड़े ही हो। अपवित्र वहाँ जा नहीं सकते। नीचे हैं तब तो ऊँच देवताओं की महिमा करते हैं, उनके आगे सिर झुकाते हैं। मन्दिरों में जाकर उनके आगे अपनी नीचता और उनकी ऊँचता का वर्णन करते हैं। फिर कहते हैं रहम करो तो हम भी ऊँच बनें। उन्हों के आगे माथा टेकते हैं। है तो वह भी मनुष्य; परंतु उनमें दैवी गुण हैं; इसलिए उनको देवता कहा जाता है। यहाँ आसुरी) गुण होने कारण असुर कहा जाता है। मनुष्य ही दैवी गुणों वाला बनते हैं फिर आसुरी गुणों वाला भी बनते हैं। मन्दिरों में जाते हैं उन्हों की पूजा करते हैं कि हम भी इन जैसे बनें। यह कोई को पता नहीं है कि इन्हों को ऐसा किसने बनाया। तुम पहले नहीं जानते थे। अभी बाप ने बताया है। तुम बच्चों की बुद्धि में सारा ड्रामा बैठा हुआ है। कैसे इस दैवी झाड़ का सैम्पलिंग लगता है। बाप आते भी हैं संगम पर। यह पतित दुनियाँ है; इसलिए बाप को बुलाते हैं। हमको आकर पतित से पावन बनाओ। इस दुनियाँ में सभी पतित ही पतित हैं। अभी तुम पावन होने लिए पुरुषार्थ करते हो। बाकी तो सभी हिसाब–किताब चुक्तू कर चले जावेंगे शान्तिधाम। मनमनाभव का मंत्र है मुख्य, जो तुमको बाप ही देते हैं। गुरु लोग तो ढेर के ढेर हैं। कितने मंत्र देते हैं। बाप का है ही एक मंत्र। बाप ने भारत में ही आकर मंत्र दिया था। जिससे तुम देवी–देवता बने थे। भगवानुवाचः है ना। वह लोग भल श्लोक आदि कहते हैं; परंतु अर्थ कुछ भी नहीं जानते। तुम अर्थ समझा सकते हो। कुम्भ के मेले मे जाते हैं वहाँ भी तुम सभी को समझा सकते हो यह है पतित दुनियाँ। नर्क। सतयुग पावन दुनियाँ थी। जिसको ही स्वर्ग़ कहा जाता है। पतित दुनियाँ में पावन कोई हो न सके। साधु, सन्यासी भी गंगा स्नान

कर पावन होने लिए आते हैं; क्योंकि वह समझते हैं शरीर को ही पावन बनाना है। आत्मा तो सदैव पावन है ही। आत्मा सो परमात्मा कह देते हैं। तुम लिख भी सकते हो। आत्मा ही पतित और पावन बनती है। आत्मा पवित्र होगी ज्ञान स्नान करने न कि पानी स्नान से। पानी का स्नान तो रोज़ करते रहते हैं। जो भी नदियाँ हैं उनमें रोज़ स्नान करते हैं, पानी भी वही पीते हैं। अभी पानी से तो सब कुछ किया जाता है। इलाहबाद में जो रहते हैं वा कलकत्ता में जहाँ ब्रह्मपुत्रा नदी जाये मिलती है। सारा किचड़ा जाकर सागर में पड़ता है। फिर सागर से कैसे बादल पानी खैंचते हैं। एकदम कंचन पानी हो जाता है। ब्रह्मपुत्रा नहीं(दी) बहुत मशहूर है। कलकत्ता में काली घाट में भी गंगा को ले आये हैं। ब्रह्मपुत्रा से ही और नदी निकलती हैं ना। प्रजापिता ब्रह्मा को ब्रह्मपुत्री कहेंगे। यह राज़ कोई शास्त्रों आदि में नहीं है। बात कितनी सहज है; परंतु किसकी भी बुद्धि में आता नहीं है। ज्ञान से ही सद्गति होती है सेकण्ड में। फिर कहते हैं ज्ञान इतना अथाह है सारा समुद्र की स्याही बनाओ तो भी अंत नहीं हो सकता। बाप भिन्न–2 प्वाइन्ट्स तो रोज़ समझाते हैं। बाप कहते हैं आज तुमको बहुत गुह्य बातें सुनाता हूँ। बच्चे कहते हैं पहले क्यों नहीं सुनाया। अरे, पहले सभी कैसे सुनावेंगे। कहानी तो शुरू से लेकर नम्बरवार सुनावेंगे ना। पिछाड़ी का पार्ट पहले कैसे सुना देंगे। यह भी बाप सुनाते रहते हैं। यह सृष्टि चक्र के आदि, मध्य, अंत का राज़ तुम जानते हो। तुम से कोई पूछे तो तुम झट रेसपॉण्ड कर सकते हो। तुम्हारे में भी नम्(बर)वार है। जिनको बुद्धि में बैठा हुआ है। तुम्हारे पास आते हैं पूरा रेसपॉण्ड न मिलता है तो बाहर जाकर कहते हैं यहाँ तो पूरी समझानी नहीं मिलती है। फालतू चित्र रख देते हैं; इसलिए इन्हों को समझाने वाला बड़ी चाहिए। नहीं तो वह भी पूरे समझाने वाले नहीं, समझाने वाली भी पूरी नहीं तो ''जैसे को तैसा मिला सुन ले राजा भील,''.... कहावत है ना। बाप कहते हैं, कहाँ–2 हम देखते है आदमी बड़ा अच्छा समझदार है (; परंतु) बच्चे इतने शुरूढ़ नहीं हैं तो फिर हम ही उनमें प्रवेश कर मदद कर लेते हैं; क्योंकि बाप है बहुत छोटा रॉकेट। आने–जाने में देरी नहीं लगती है। उन्होंने फिर बहुरूपी वा सर्वव्यापी की प्वाइन्ट्स उठा ली है। यह तो बाप तुम बच्चों को बैठ समझाते हैं। कोई–2 आदमी अच्छे होते हैं तो उनको समझाने वाला भी ऐसा चाहिए। आजकल तो कोई छोटे पन से भी शास्त्र आदि कंठ कर लेते हैं; क्योंकि आत्मा संस्कार आती है। कहाँ भी जन्म ले फिर वेद–शास्त्र आदि पढ़ने लग पड़ेंगी। अंत मते सो गति होता है ना। आत्मा संस्कार ले जाती है ना। अभी तुम बच्चे स(मझते) हो आखिर वह दिन आया आज। जो स्वर्ग के द्वार सच्च–2 खुलते हैं। नई दुनियाँ की स्थापना, पुरानी दुनियाँ का विनाश होना है। मनुष्यों को तो यह भी पता नहीं है कि स्वर्ग नई दुनियाँ को कहा जाता है। तुम बच्चे जानते हो। हम सच्ची–2 सत्य ना॰ की कथा वा अमरनाथ की कथा सुन रहे हैं। है एक ही कथा। सुनाई भी एक ने है। दृष्टांत है सभी तुम्हारे जो फिर भक्ति मार्ग में उन्होंने उठा ली है। तो संगम पर बाप ही आकर सभी बातें समझाते हैं। यह बड़ा भारी बेहद का खेल है। इसमें पहले–2 है सतयुग–त्रेता राम–राज्य। फिर होता है रावण राज्य। यह ड्रामा बना हुआ है। इनको अनादि अविनाशी कहा जाता है। हम सभी आत्माएँ हैं। यह ज्ञान कोई को है नहीं। जो तुमको बाप ने ज्ञान दिया है। जो भी आत्माएँ हैं उनका पार्ट ड्रामा में नुँधा हुआ है। जिस समय जिसका जो पार्ट होगा तब आवेंगे। वृद्धि को पाते रहेंगे। बच्चों के लिए मुख्य बात है पतित से पावन बनना। बुलाते भी हैं हे पतित–पावन आओ। घड़ी–2 बुलाते रहते हैं। बच्चे ही बुलाते हैं। बाप भी कहते हैं हमारे बच्चे काम चिक्षा पर बैठ भस्म हो गए हैं। यह है यर्थाथ् बातें। यह भी समझते हो आत्मा जो अकाल है उनका यह तख़्त है लोन लिया हुआ है। ब्रह्मा के लिए भी तुमसे पूछते हैं यह कौन है? बोलो, देखो लिखा हुआ है भगवानुवाचः मैं साधारण तन में आता हूँ। वह झिंझा हुआ (सजाया हुआ) श्री कृष्ण ही 84 जन्म ले साधारण बनता है। साधारण फिर वह बनता है। नीचे तपस्या कर रहे हैं। जानते हैं हम यह बनने वाले हैं। त्रिमूर्ति तो बहुतों ने देखा है; परंतु उनका अर्थ भी चाहिए ना। स्थापना जो करते हैं फिर पालना भी वही करते हैं स्थापना

के समय का नाम–रूप, देश–काल अलग, पालना का नाम–रूप, देश–काल अलग है बिल्कुल। यह बात समझाने में तो बहुत सहज है। यह नीचे तपस्या कर रहे हैं यह बनने वाले हैं। यही 84 जन्म ले यह बनते हैं। कितना सहज ज्ञान है सेकण्ड का। बुद्धि में यह ज्ञान है हम यह देवता बनते हैं। 84 जन्म भी इन देवताओं को ही लेनी है। और कोई लेते हैं क्या? नहीं। 84 जन्म का राज़ भी बच्चों को समझा दिया है। देवताएँ ही हैं जो पहले आते हैं। खिलौना होता है ना मच्छलियों का। मच्छली ऐसे नीचे जाती है फिर ऊपर चढ़ती है। वह भी जैसे सीढ़ी है। भ्रमरी, कच्छुओं आदि का मिसाल भी दिए जाते हैं वह सभी हैं इस समय के। भ्रमरी में भी देखो अकल कितना है। मनुष्य अपन क(ी) बहुत अकलमंद समझते हैं; परंतु बाप कहते हैं भ्रमरी जितना भी अकल मनुष्यों को नहीं है। सर्प पुरानी खल बदल नई ले लेते हैं उनमें भी कितना अकल है। यह बहुत अच्छी दृष्टांत है जो बाप ने दिये हैं। फिर बाद में सन्यासियों ने ले ली है। बच्चों को कितना समझदार बनाया जाता है। समझदार और लायक। आत्मा पवित्र होने कारण लायक बनती है। अपवित्र होने से नालायक बनती है। तो उनको पवित्र बनाकर लायक बनाना है। वह है ही लायकों की दुनियाँ। लायक को देवता कहा जाता है। यह तो एक बाप का ही काम है जो सारी सृष्टि को हेल से हेविन बना बनाते हैं। हेविन क्या होता है यह मनुष्यों को पता नहीं। हेविन कहा जाता है देवी–देवताओं की राजधानी को। सतयुग में ही देवी–देवताओं का राज्य होता है। अभी तुम समझते हो सतयुग नई दुनियाँ में हम ही राज–भाग करते हैं। 84 जन्म भी ज़रूर हमने लिया है। हम ही सतोप्रधान थे फिर तमोप्रधान बने हैं फिर बाप सतोप्रधान बनाते हैं। कितना बारी राज्य लिया है फिर गवांया है। यह भी तुम जानते हो। राम मत से तुमने राज्य लिया है। रावण मत से राज्य गंवाया है। अभी फिर ऊपर चढ़ने लिए तुमको राम मत मिलती है। गिरने लिए नहीं मिलती है। समझाते तो बहुत अच्छी तरह से हैं; परंतु भक्ति मार्ग की बुद्धि चेंज बड़ी मुश्किल होती है। भक्ति मार्ग का शो बहुत है। वह है दुब्बण। एकदम गले तक उस दुब्बण में डूब पड़ते हैं। भक्ति को दुब्बण कहा जाता है। सारी सृष्टि के मनुष्य मात्र दुब्बण में फंसे हुए हैं। बाप कहते हैं जब सभी की अंत होती है तब फिर में आता हूँ। मैं आकर इन बच्चों द्वारा ही कार्य कराता हूँ। बाबा के साथ सर्विस करने वाले ब्राह्मण ही हो। जिनको खुदाई खिदमतगार कहा जाता है। यह भी सबसे अच्छी खिदमत है। श्रीमत बच्चों को मिलती है कि ऐसे–2 करो। फिर उनसे छांटकर निकलेंगे। यह भी नई बात नहीं। कल्प पहले भी जितने देवी–देवताएँ निकले थे वही फिर निकलेंगे। ड्रामा में नूँध है। तुमको सिर्फ़ पैगाम पहुँचाना है। है बहुत सहज; इसलिए बाबा ने गीत भी बनाई थी। वह लोग कितना खर्चा करते हैं। एक मैंगज़ीन है जिसमें खास श्री कृष्ण के हिंसक चित्र दिखाई है। कृष्ण को ही जैसे कि हिंसक बना दिया है। स्वदर्शनचक्र से सभी का गला काटा। इनको मारा। स्वदर्शनधारी तो कृष्ण है नहीं। इनका अर्थ भी तुमने समझा है स्व को दर्शन होता है चक्र का। बाकी गले आदि काटने की कोई बात नहीं। आसुरी सम्प्रदाय है ना। तुम भी थे। बाकी श्री कृष्ण कोई चक्र थोड़े ही फिराता है जिसमें आसुरी दुनियाँ खलास हो जाती है। यह सभी है दंतकथाएँ। भक्ति मार्ग है ना। भगवान आते ही हैं कल्प के संगम पर। जबकि भक्ति भी फुल फोर्स में है। बाप आकर सभी को ले जाते हैं तुम पर अभी अविनाशी वृक्षपत की दया है। सभी स्वर्ग़ में जाते हैं। फिस पढ़ाई में नम्बरवार होते हैं। कोई पर मंगल की दशा, कोई पर राहू की दशा बैठती है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

डायरैक्शनः– आगरा में गांधी नगर वाला जो सेन्टर था वह मकान अभी छोड़ दिया गया है। वह सेन्टर विजय नगर म्यूज़िम में शिफ्ट किया गया है।

**BRAHMA KUMRIS**
**207/2 North vijay Nagar**
**Ring Road**
**AGRA-4**

जिसकी एड्रेस यह हैः–